



एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.—पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को “प्रकृति, पर्यावरण एवं वन” विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गा। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन—सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द को आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो कि विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चौपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन—जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास नहीं करना चाहिए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन

भा.वा.अ.शि.प.—पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा प्रकाशित यथा—वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु—चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु—सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन—महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।



शोधछात्रों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतिकरण

- संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में उपस्थित शोध छात्रों द्वारा निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया—
- **उज्जी पुष्ट लता:** जलवायु परिवर्तन शमन एवं अनुकूलन में वनों का महत्व
 - **अनूप कुजूर:** कार्बन प्रच्छादन और कार्बन व्यापार में वनों की भूमिका
 - **रूपम दास:** भारत की वन जैव विविधता का संरक्षण
 - **महुआ पाल:** उत्तर प्रदेश के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कृषिवानिकी हेतु उपयुक्त वृक्ष प्रजातियां
 - **स्वाति प्रिया:** कृषिवानिकी में मृदा संवर्धन और मीलिया डूबिया
 - **राहुल निषाद:** तराई क्षेत्र में अगरवुड की सम्भावनाएं
 - **दर्शिता रावत:** वानिकी में ए. आई—एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण
 - **आशीष कुमार यादव:** महुआ—एक बहुपयोगी वृक्ष
 - **सत्यव्रत सिंह:** कुछ अल्प ज्ञात पौधों का जैव—पूर्वेक्षण, संरक्षण और उपयोगिता
 - **सांचिली वर्मा:** पीलीभीत के बांसुरी उद्योगों के लिए चयनित बॉस प्रजातियों का प्रारम्भिक अध्ययन

कार्यक्रम की झलकियाँ

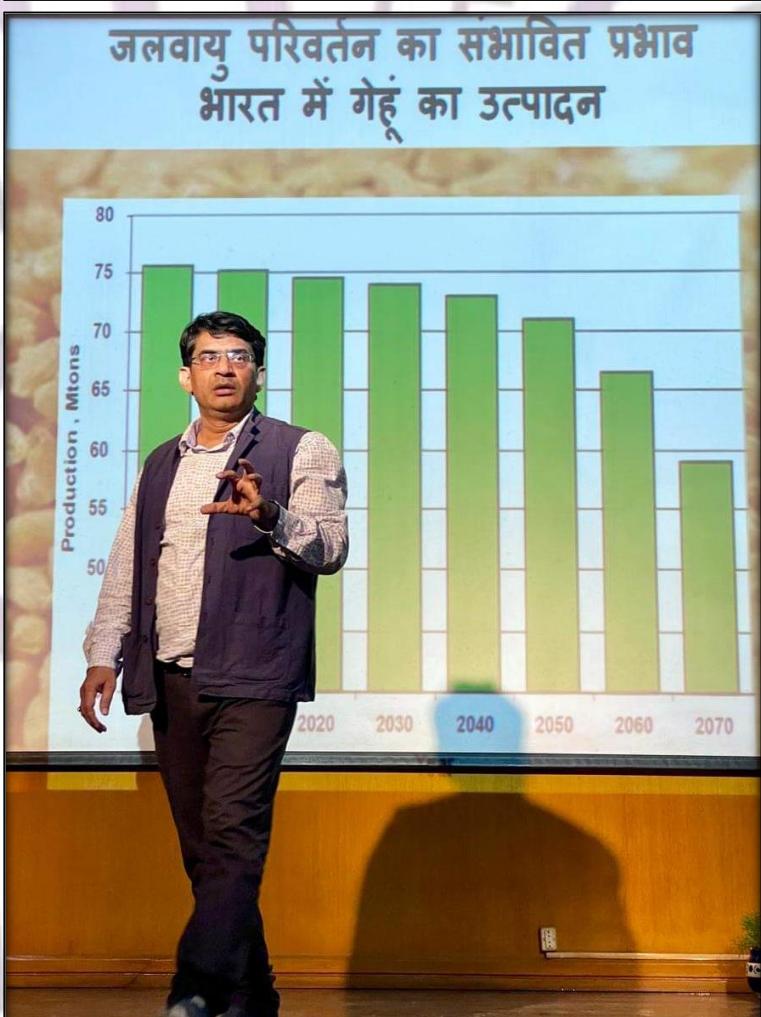




















Seminar held under Indian Forestry Research and National Science Academy

SANYAM BHARAT CORRESPONDENT



Prayagraj: Prof. Rajendra Singh (Rajju Bhayya) University, Prayagraj Vice Chancellor Dr. Akhilesh Kumar Singh, Registrar Sanjay Kumar, Agriculture Faculty Coordinator, Prof. Under the guidance of Rajkumar Gupta, on behalf of the Faculty of Agriculture, teacher Dr. Anuj Kumar Mishra along with a group of B.S.Agriculture and M.Sc.Agriculture students visited the Indian Council of Forestry Research and Education-Ecological Center Prayagraj (Environment, Forest and Ministry of Climate Change, Government of India) and National Science Academy, India, Prayagraj, un-

der the joint aegis of "National Scientific Seminar" on 27/09/2024, representation in the seminar organized on the subject of Nature, Environment and Forest in the auditorium of National Science Academy, India, Prayagraj. Did ! The chief guest of the program was Prof. Satyakam, Vice Chancellor U.P. Rajshi Tandon Open University, Prayagraj and headed by Center Head Dr. Sanjay Singh Senior Scientist, Coordinator Dr. Anubha Srivastava, Dr. Kumud Dubey, Dr. Anita Tomar, Alok Yadav, Scientist and Ankur Srivastava Research Assistant, (ICFRE-ERC), Prayagraj were present.

विज्ञान की भाषा को सरलीकृत करने से लाभ

PRAYAGRAJ (27 Sept): पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र व राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी शुरुआत राजघिटंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने दीप प्रज्वलन से की। उन्होंने कहा, विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। संस्थान द्वारा हिंदी में अध्ययन सामग्री तैयार करने में सहयोग देने का भी भरोसा दिया। इस दौरान वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चंदन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि के लिए सहजन की खेती के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

बौद्ध यादव/बालवी दीनिक

प्रयागराज। भा.वा.अ.न.प.-पारिस्थितिक पुस्तकालय केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारतीय विज्ञान एवं संस्कृत तत्वावधान में हिंदी पर्यावाद के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को अन्वेषणी, पर्यावरण एवं वनकृति विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमानों द्वारा दीप प्रस्तुतन के साथ किया गया। केन्द्र अधिकारी सचिव डॉ. सनोज करण कराया गया। विज्ञान अतिथि आयोजक कार्यक्रम की समराना किसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम सचिव डॉ. अनुष्ठानी विज्ञान एवं आयोजन के अंतर्गत कार्यक्रम की कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से प्रस्तुतन के साथ किया गया। केन्द्र अधिकारी सचिव डॉ. सनोज कराया गया। विज्ञान अतिथि आयोजक कार्यक्रम की समराना किसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम सचिव डॉ. अनुष्ठानी विज्ञान एवं आयोजन के अंतर्गत कार्यक्रम की अंतर्गत कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से प्रस्तुतन के साथ किया गया।



उन्होंने कहा कि यदि आपका अन्तीम तोमर द्वारा किया गया। मानसून विज्ञानी की वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी मूल वक्ता के रूप में प्रो. धर्मनव चूर्णितयों और मानवानाएं विषय आलोक यादव एवं डॉ. अनुष्ठा प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार चोरपा, भोडिया एवं सम्पर्क पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्रीवास्तव के साथ केन्द्र कमाने के इच्छुक हो, जो विषय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मुदुला पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, विद्यार्थियों के हित में हो तो उसे द्वारा बदलाव द्वारा, बलती विषय, प्रोफेसर, सत्यक विज्ञान नेहरू यादव भारती विद्यालय के सर्टिफिकेट प्रतिष्ठित और जन-जागरूकी कालेज विभाग, सीएपीडी डिग्री कालेज सम्बिधिविद्यालय, डॉ. पंकज कोसी में समर्पित किया गया। विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते तथा डॉ. पूनम शुक्ल, सदा श्रीवास्तव, कालेज प्रोफेसर, उपर्युक्त कालेज की गोपनीयतालाला प्रोफेसर, हिंदूवाद ननत विज्ञान इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा

केन्द्र द्वारा प्रकाशित को रोकें का प्रयास न किया महाविद्यालय के साथ केन्द्र की विभिन्न विषयों पर व्याख्यान यथा वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों वाले। प्रथम तकनीकी सत्र में विष्णु विज्ञान डॉ. कुमुद द्वे द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के को अधिक समृद्धि हेतु चंदन, आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश विजय विषयों पर व्याख्यान अनिम सत्र में विद्यार्थियों यथा कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय उम्बी पुष्प लला, अनुष कुमार, द्वृष्टि, कृषकों की अधिक विषय इलाहाबाद विश्वविद्यालय तकनीकी सत्र अप्रतित वक्ता के रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती ममृदि हेतु-सत्रकारी की बोनी तथा द्वारा कृषि और मनव व्यवस्था पर रूप में डॉ. अनुष्ठानी कुमार, एसो. रिया, राहुल निवाद, दीर्घीत गवत, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, असाधीप कुमार यादव, सत्यव्रत के साथ कृषिवानिकी प्रजातियों विषय विज्ञान प्रस्तुत करते तथा डॉ. शैलेन्द्र गय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सिंह तथा सार्वजीवी वर्षा आदि विद्यार्थी विज्ञान की विभिन्न विषयों पर आधारित प्रोफेसर, के बन्द्र, सलेन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, जीष्ठ छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक जापन केन्द्र की विष्णु विज्ञान डॉ. द्वारा भारतीय ग्राम कालेज तकनीकी व्याख्यान में हिस्सा लिया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भा.ग.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान का जन सामाजिक तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्घोषन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत

कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय

के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में समिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक,

के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता का रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव

स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।



में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आहारन किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्घोषन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों

कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिविनिकी में उपयोगी मीलिया इविया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिविनिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भा.ग.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह संघर्ष ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामाजिक तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्घोषन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत

कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय

के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में समिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक,

के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता का रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह,

पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी,



में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आहारन किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्घोषन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों

कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिविनिकी में उपयोगी मीलिया इविया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिविनिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता

के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता का रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का किया आह्वान

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की ओर से हिंदी परखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी हुई। इसका शुभारंभ उत्तर प्रदेश



डॉ धनंजय चोपड़ा।
संवाद

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने किया।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारी सचिव डॉ. संतोष शुक्ला ने अकादमी के कार्यों की जानकारी साझा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव और राजभाषा के



राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में वैज्ञानिक, शिक्षक व विद्यार्थी। संवाद

सहायक निदेशक अजय कुमार चौधरी ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।

इस मौके पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के धनंजय चोपड़ा ने बदलती दुनिया, प्रकृति और जन जागरूकता के विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में डॉ. उमेश कुमार

सिंह, डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रो. के. बनर्जी, डॉ. मृदुला त्रिपाठी, डॉ. पूनम शुक्ला, डॉ. कुमुद दूबे, प्रवीण शेखर आदि ने भी अपने विचार रखे।

इस संगोष्ठी में लगभग 250 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। अंत में डॉ. अनीता तोमर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है

विद्वोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। भा.गा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी परखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारी सचिव डॉ. सन्तोष

शुक्ला ने उद्घोषन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

विशिष्ट अतिथि अजय कुमार

चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्घोषन में कहा कि

विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आम्सात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में समिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया दूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया।



एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी सम्पन्न

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्घोषण में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्घोषण में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी

प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सटिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-तृक्षारोपण



तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया हूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप

में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलंद्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय

महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद
विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियाँ
और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथा केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

विज्ञान भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से आत्मसात करने से लाभः आचार्य सत्यकाम

प्रयागराज (हि. स.)। परिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वज्ञान में बढ़ती पुखबाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार को 'प्रकृति, पर्यावरण एवं उन विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक समोच्ची का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उप राजिने टट्टन मुकु विश्वविद्यालय के कल्पनी आचार्य सत्यकाम ने कहा कि विज्ञान की भाषा को विनिश्च लोक भाषाओं से शब्द आत्मसंकर करके सरलीकूर की हो सकती है। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिन्दी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा कहा यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार का अध्ययन समर्पी तैयार करने का इच्छुक है तो विज्ञानियों के द्वित में ही तो ही इस विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कार्स में सम्मिलित किया जा सकता है। मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग के प्रो. धननंदराम चौधरी ने बलरत्नी दुनिया, प्रकृति और जगत्कालकात पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा, कि भाषा की गीतरीताला को रोकने का प्रयास न किया जाए। केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामाजिक तक पहचान आवश्यक है। जिसके लिए हिन्दी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी वैज्ञानिक अधिसंसारी सचिव डॉ. सनोवन ने अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कारणों का उल्लेख किया। केन्द्र की विरक्ति वैज्ञानिक एवं आयोजन संचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि अजयराम कुमार धैर्थी सहायक राजभासा, भारत सरकार, गणजनायाद को कार्यालय में हिन्दी-

के प्रयोग को बढ़ाने का आहार
किया। डॉ. उमेश कुमार सिंह
पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद।

प्रोफेसर के. बनर्जी, वायुमण्डलीय
महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद
विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय ग्रीष्म



विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानसिक स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का अध्ययन कर रहा है।

कालीन मानसून भविष्यवाणी के चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर जागरूकता बढ़ाव देता है।

अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. अदिनाय, ने भी विभिन्न विषयों पर वाचाक्यान् प्रस्तुत किया। इस अवसरे पर केन्द्र द्वारा संविधान वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समुद्दिति हेतु घटन्यां कृषिविनिकी में उपर्योगी मीलिया द्विविधा, कृषकों की आर्थिक समुद्दिति हेतु सहजन की खेती तथा महोनीयता के साथ कृषि विनिकी प्रयोगों एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान प्रस्तुतिका विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की विरल वैज्ञानिक डॉ. अनीता नेटवर्क से किया-

प्रयागराज विकास प्राधिकरण प्रयागराज

आवश्यक सूचना

जनसाधारण को यह सुनिश्चित किया जाता है कि निम्नलिखित आवेदक/आवेदकों ने नीचे सारीके स्तम्भ-3 उल्लिखित सम्पत्ति, जो प्रयागराज अंतरण/नामान्तरण अपने नाम कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। निन्म बदनों/भूखण्डों के नाम परिवर्तन की कार्यव

दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है।

प्रभात वंदना संवाददाता

प्रयागराज। भा.गा.अ.शि.प.-
पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र,
प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान
अकादमी, भारत के संयुक्त
तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के
अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन'
वैष्य पर एक दिवसीय राष्ट्रीय
वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन
किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ
मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम,
कुलपति, उत्तर प्रदेश राज्यिट्टन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा
मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप
प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र
प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत
भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि
वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य
तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके
लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है।
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के
अधिकारी सचिव डॉ. सन्तोष

शुक्ला ने उद्घोषन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

विशिष्ट अतिथि अजय कुमार



चाँधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्घोषण में कहा कि

विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में समिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-द्रुष्टारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया ड्विबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया।

6

लखनऊ, शनिवार, 28 सितंबर 2024

प्रथागराज

विज्ञान की भाषा को आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा: प्रो. सत्यकाम

(पल के अंदरवार)

► वैज्ञानिक अनुसंधान को
जन सामान्य तक पहुँचाना
नमी दॉ गंतव्य पिंड

► दिनी प्रतिवाद के बहु

■ १६८ पञ्चपाठि द
एक दिवसीय राष्ट्रीय वै
संगोष्ठी संपन्न

प्रधानार्थ। भारतीय-पर्सियनिक संस्कृतपन केन्द्र प्रधानार्थ एवं शास्त्रीय ज्ञान अकाशमी भारत के संस्कृत संज्ञान में हीरो पञ्चवाहा के अन्तर्गत क्रान्ति के 'प्रकृति, पर्यावरण एवं न' विषय पर एक विश्वासीय शास्त्रीय लाइनिक संस्कृती का आयोगन किया गया। यही कामा का सुभाराष्ट्रम् युक्त अतिरिक्त विचारी मन्त्रवर्णन, कुलपति उत्तर प्रदेश की टांडन मुकुट विधिविवरण तथा सामाजीन गणपत्यान्यों द्वारा दीप प्रज्ञान के

य किया गया। राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी को संबोधित होए हुए मुख्य अतिथि शर्हन टण्डन ने विभिन्नतात्मक के कुलसंग्रह आवश्यकतम ने दियी प्रधानम से आवश्यकत्वपूर्क जीव संसाधन करते हुए कहा कि जल की धारा को विभिन्न लोक प्राणीओं से शब्द आवश्यक करके संकीर्तन करने में ही लाभ होगा। उद्घोषणा का किए गए अवकाश संभवतः विज्ञान के इस में किसी प्रकार की अवश्यकता नहीं बर करने का इच्छा हो, किंतु जो जातों के लिए में हो तो इस विभिन्नतात्मक के



स्वीच्छ ढाँ। सनोरोग शुक्रत ने उद्गोपन में अक्षयतपी की द्वारा सिलहन प्रसाद के कारणी कर विस्तर में उल्लेख किया। केन्द्र की वर्तमान वैज्ञानिक एवं आधुनिक स्वीच्छ ढाँ। अनुभा शीक्षासंस्थ द्वारा कार्यक्रम की कर्पोरेशन से अवश्यक कराया गया। विविध अवधि अवधि कुमार और बड़ी वयस्क निर्देशक, शस्त्रमाला और शस्त्र लकड़ा, गणितशास्त्र एवं ज्यानशास्त्र में विद्युतों का प्रयोग को बढ़ावा का आवश्यक किया। कार्यक्रम में धनशक्ति ज्ञापन केन्द्र की वर्तमान स्थिति



पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से आयोजित संगोष्ठी में पुस्तिका का विमोचन करते अतिथिगण ● सौ. संस्थान

ईल आन बोर्ड

प्रदेश में एनआइसी की ओर से की, गई अधियाचन पोर्टल व्यवस्था में सभी गों से अधियाचन प्राप्त किए जाएं। आयोग के सचिव मनोज कुमार ने या कि अधियाचन के लिए बेसिक, अमिक, उच्च, तकनीकी, व्यावसायिक, प्रसंख्यक एवं टीईटी के लिए संबंधित गों के प्रमुखों को पत्र पहले ही भेजा चुका है। संबंधित विभागों ने नोडल कारी नामित कर दिए हैं। आयोग में सचिव शिव जी मालवीय को नोडल कारी बनाया गया है। प्रयास किए जा रहे कि सरकार और शिक्षा सेवा चयन बोर्ड की मंशा के अनुरूप धर्तियों को प्रतिक्रिया तेज़ी से शुरू की जा सके।

विज्ञान की भाषा को सरलीकृत करने से मिलेगा लाभ

जासं, प्रयागराज : पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र व राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं बन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शुरुआत राजधिर टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने दीप प्रज्वलन से की। उन्होंने कहा, विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। इस दौरान वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की अर्थिक समृद्धि हेतु चंदन, कषिवानिकी में उपयोगी मीलिया दूबिया, कृषकों की अर्थिक समृद्धि के लिए सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डा. संतोष शुक्ला ने अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनुभा श्रीवास्तव ने आयोजन की रूप रेखा बताई।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

प्रयागराजा। भा. गा. उ.सि.प.- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संसद्य तथाधार में हिंदी वाग़ाडा के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को प्रकृति, पर्यावरण एवं दृष्टि विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोग नियमित गया। संगोष्ठी का शुभार्चा मुख्य अधिकारी आर्यार्पात सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टाइटन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मचारीसीन गणमन्डलों द्वारा दीपक प्रज्ञलि के साथ विधाया। केंद्र भ्रामण द्वारा, संजय सिंह द्वारा विधाया प्रस्तुत करते हुए वसाया कि वैज्ञानिक अनुसंधानों को जन सामन्य तक पहुंचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिकारीसंस्था सचिव अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोगी विद्वाँ डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवतार करया गया। विशिष्ट अतिथि

A photograph showing four individuals standing in front of a large vertical banner. The banner has text at the top: "PLATINUM AWARD CELEBRATION OF NAME" and "SCHOOL OF DISTINCTION". Below this, it lists "National President Of India Dr. A.P.A. Abdul Nabi" and "President Of The Academy Of Indian Education". The banner is decorated with green garlands. The people in the photo include a man in a white shirt and tie, a woman in a pink sari, and two younger women in dark blouses and skirts. They appear to be at a formal event.

की वरिल वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धननय घोषाल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत की गौतीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सभा में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कुर्सी और मानव स्वास्थ्य पर जलायु परिवर्तन का प्रबाल विषय तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, वै. बनर्जी, गायपुण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय श्रीमती कालीन मानसुन्धरी विष्वविद्यालय की चुनीतियां और सम्भावनाएँ विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मुहुरुल त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सांस्कृतिक दिग्गी कॉलेज तथा पूनम शुक्ला, प्रोफेसर, हमेस्वरी नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिल वैज्ञानिक डॉ. कुमुद द्वेरा द्वारा प्रस्तुत सभा में अन्तिम विषय नामांकन महाविद्यालय के द्वारा विदेशी वैज्ञानिक विभाग का नाम दिया गया।

विभिन्न विषयों पर व्याख्यानन-
त किया गया। द्वितीय तकनीकीमें
आमतौर पर वाक के लक्ष्य में हों।
उनीं कुमार, एसो. प्रोफेसर,
विजयन विभाग, इलाहाबाद
विद्यालय तथा डॉ. सचदेव
एसो. प्रोफेसर, वानिकी विद्यालय,
शुआरास द्वारा दिया गया।
ख्याप्रस्तुत किया गया।
वानिकी व्याख्यान में वरिच-
क्टी और अन्तीम शीर्षकास्त के
पर एवं डॉ अनुभुवी की समीक्षिव्यालय, डॉ. फैज-
लसात्ता, एसो. प्रोफेसर,
हावाद विद्यालय द्वारा
दिया गया। कार्यक्रम के अन्तिम
में विद्यार्थियों द्वारा उत्तरी पुष्प-
क अनुभुवी, रुधीप, रुधीप
पाल, खातारी, रिया, राहुल
दग्द, दरिशता रावत, आशापा-
नव एवं यादव, सत्यवत सिंह तथा
विद्यार्थी वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा
विषयों पर प्रस्तुत सारांश
व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठीमें
50 से अधिक प्रतीभागियों ने
साझा लिया।



विज्ञान भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से आत्मसात करने से लाभ : आचार्य सत्यकाम

प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज(हिंस.)। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दौ पटवाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन-विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उप्रेति राजीव टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा।

मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिन्दौ माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा कहा यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टाईफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है।

मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय,



मीडिया एवं सम्पर्क विभाग के प्रो. धनंजय चोपड़ा ने बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए।

केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुंचाना आवश्यक है जिसके लिए हिन्दौ

उपर्युक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

के अधिकारी सचिव डॉ. सनोष शुक्ला ने

अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चैधरी सहायक निदेशक राजभाषा, भारत सरकार, गणजायान ने कार्यालय में हिन्दौ के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।

डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृपि

और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर के बन्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मुदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिप्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा.

प्रोफेसर, हेमवती नदन बहुगुण महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, बनस्पति विज्ञान विभाग के एसो. प्रोफेसर डॉ. अश्वनी कुमार तथा शुआद्स वानिकी महाविद्यालय के एसो. प्रोफेसर डॉ. सत्येन्द्र नाथ ने विभिन्न वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेरणा कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, ने भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केन्द्र द्वारा प्रकाशित वृक्षशोण पत्रिका, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मौलिया झूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु सहजन की खेती तथा महोगनी के साथ कृषि वानिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आशारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने किया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन संपन्न

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.- आयोजन सचिव डॉ. अनुभा पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान से अवगत कराया गया। विशिष्ट अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वावधान अतिथि अजय कुमार चैधरी, में हिन्दौ पटवाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत को रक्षणीय, पर्यावरण एवं वन-सरकार, गणजायान ने कार्यालय में विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय विद्यार्थी विद्यार्थियों के हिते प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिन्दौ माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की तथा अपने उद्घोषन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि वादि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में करते हुए बताया कि वैज्ञानिक किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री अनुसंधान को जन सामान्य तक तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सार्टाईफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित वयथा-वृक्षशोणण पर आशारित अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के क्षेत्रों का अध्ययन किया गया।

हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के क्षेत्रों का विस्तार से उल्लेख किया। हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी अकादमी के द्वारा विज्ञान की आयोजन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद वैज्ञानिक एवं मौलिया झूबिया, कृषकों की आर्थिक



दीप प्रज्ञवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि

समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा जापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य साथ कृषिवानिकी प्रजातियां एवं वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, प्रबन्धन विषय पर आशारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा तकनीकी सत्र आर्मित्र वक्ता के रूप लिया।

जन-जगरूकता विषय पर व्याख्यान में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की बनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद गतिशीलता को रोकने का प्रयास न विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, आर्मित्र वक्ता के रूप में डॉ. उमेश शुआद्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव विषय पर तथा डॉ. प्रोफेसर, शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के बन्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन के अवधारणा का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। सम्भावनाएं विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अनिम सत्र में विद्यार्थियों द्वारा उज्जी पुष्प लता, अनूप कुर्जू, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, गहुल निषाद, दर्शना रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यवत तथा सिंह तथा साचिली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। सोनोषी में 250 तकनीकी सत्र आर्मित्र वक्ता के रूप लिया।

आप तैयार करें अध्ययन सामग्री शुरू करेंगे कोर्स : प्रो. सत्यकाम

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। विज्ञान के क्षेत्र में वन अनुसंधान केंद्र का हिंदी भाषा में प्रयोग बहुत ही सराहनीय है। अगर यह संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में कोई अध्ययन सामग्री तैयार करे तो राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय इस पर छात्र हित में कोर्स भी चला सकता है। यह बातें राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम ने कहीं। कुलपति शुक्रवार को वन अनुसंधान केंद्र, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की ओर से हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के अवसर पर आयोजित 'प्रकृति, पर्यावरण और वन' विषय पर गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। इस दौरान केंद्र की ओर से पौधरोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि के लिए चंदन, कृषिवानिकी में उपयोगी



वन अनुसंधान केंद्र में शुक्रवार को गोष्ठी का शुभारंभ करते अतिथि। • हिन्दुस्तान

मीलिया डूबिया, सहजन की खेती व महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तकों का विमोचन किया गया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने अकादमी के विज्ञान प्रसार के कार्यों का उल्लेख किया। आयोजन सचिव

डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की जानकारी दी। मुख्य वक्ता प्रो. धनंजय चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम तकनीकी में डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. शैलेंद्र राय, प्रो. के. बनर्जी, डॉ. मृदुला त्रिपाठी, डॉ. पूनम शुक्ला, डॉ. कुमुद दूबे आदि ने विचार रखे। केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने धन्यवाद दिया।